International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

हिन्दी नाट्य साहित्य में नारी भावना का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Parmila
Research Scholar,Deptt. of Hindi, NIILM University
Email : rakeshmadhur79@gmail.com

समाज को गतिशील बनाने में पुरूष और नारी की समान भूमिका होती है। दोनों का अपना महत्व है। कहीं पर पुरूष पात्र अधिक प्रभावी होता है, तो कहीं पर नारी का। भारतीय मान्यता में नारी को पुरूष से अधिक महत्व दिया जाता है। हिन्दी नाटकों में नारी की विविधापूर्ण भूमिका विशेष उल्लेखनीय है। हिन्दी के नाट्य गीतों मे नारी कहीं प्रेम रूप में प्रस्तुत किया गया है, तो कही पर विषम रूप में चित्रित किया गया है।

'वैदिक हिंसा हिंसा न भवति' नामट में परिवेश का अधिकांश स्वरूप ही विषम दर्शाया गया है। यहां नारी को भी इसी दृष्टि से अपनाया गया है :–

''एहि असार संसार में चार वस्तु हैं सार।
जुआ मदिरा मांस अरू नारी संग विहारस।।''[1]

मनुष्य के जीवन में मुख्य धार प्रेम है। जहां पर प्रेम का सहज रूप मिलता है। वहां सुखद जीवन की संभावना होती है। भारतेन्दु हरिशचन्द्र कृत नाटक 'श्री चन्द्रावली6 में ललिता परम प्रसन्नता से चन्द्रावली के सुखद जीवन की चर्चा गीत करती है :–

हौं तो यही सोच मैं विचारत रही रो काहें,
दरपन हाथ तें न छिन बिसरत हैं।
त्यों ही हरिशचन्द्र जू वियोग औ संयोग दोऊ,
एक से तिहारे कछु, लखि न परत है।।
जनी आज हम ठकुरानी तेरी बात,
तू सौ परम पुनीत प्रेम पथ बिचरत है।।[2]

कोमल हृदय नारी अपने सुखद पलों में सुन्दर भावों को मन में सजाती और गीतों के माध्यम से अन्य को भी प्रसन्न करती है। जयशंकर प्रसाद कृत नाटक 'चन्द्रगुप्त' में सुवासिनी सुन्दर परिवेश में सुन्दर और मनमोहक भावों को गीतों में प्रस्तुत करती है। :–

''नयनों में मंदिर विलास लिए,
उज्जवल आलोक खिला,
हंसती सी सुरभि सुधार रही,
अलकों की मृदुल अनी।
सखे ! वह प्रेममयी रजनी,

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

मधुर मंदिर सा यह विश्व बना,
मीठी झंकार उठी,
केवल थी तुमको देख रही,
स्मृतियों की भीड़ घनी,
सखे ! वह प्रेममयी रजनी।''[3]

जयशंकर प्रसार कृत 'ध्रुव स्वामिनी' नाटक में प्रेम पियासु नारी की भाव–भंगिमा प्रस्तुत की गई है। कोमा के मन में शकराज के प्रति निःस्वार्थ प्रेम है। वह अपने नीरस जीवन में बसंत ऋतु के मधुमय बहार की आतुर मन से प्रतीक्षा कर रही है। इन्हीं भावों में वह गीत गाती है :

यौवन तेरा चंचल छाया।
इसमें बैठ घूंट भर पी लूं
जो रस तू है लाया।''[4]

चन्द्रगुप्त नाटक में अलका भी जीवन के उपवन को प्रेम–जल से सींच कर धन्य होना चाहती है। उसे ऐसी उपलब्धता दुर्लभ लग रही है, फिर भी इसी दिशा में गतिशील है। वह भाव विभोर होकर गा रही है :–

''प्रथम यौवन मदिरा से मत्त, प्रेम करने की थी परवाह,
और किसको देना है हृदय, चीन्हने की न तनिक थी चाह।
बचे डाला था हृदय अमोल, आज वह माँग रहा था दाम,
.....
उड़ रही है हत्पथ पर धूल, आ रहे हो तुम बे परवाह।
करूँ क्या दृग जल से छिड़काव, बनाऊँ मैं यह बिदलन राह।
संभलते धीरे–धीरे चलो, इसी मिस तुमको लगे विलम्ब,
सफल हो जीवन की सब साध, मिले आशा को कुछ अवलम्ब।।''[5]

जयशंकर प्रसाद में नारी के प्रति आदर्श भावना है। उनके नाटकों की पात्राओं में प्रेम का सहज उच्छलन सर्वत्र दिखाई देता है। सुवासिनी राक्षस के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करती हुई गाती है :–

''तुम कानन किरण के अन्तराल में,
लुक छिपकर चलते हो क्यों ?
नत मस्तक गर्व वहन करते,
यौवन के घन, रस कन ढरते।
हे लाजे भरे सौन्दर्य बता दो,
मौन बने रहते हो क्यों ?''[6]

मानव जीवन में सुख–दुख की छाया दिन–रात की भांति आती जाती रहती है। नारी के जीवन में यदि प्रेम की शीतल छाया होती है तो वियोग की आँधी या समाज की उपेक्षा–तिरस्कार में तपना भी पड़ता है। हिन्दी के नाट्य गीतों में नारी के ऐसे विषम संदर्भों का भी विषद चित्रांकन मिलता है। इसका मुख्य कारण है कि समाज में नारी की बहुत कुछ स्थिति ऐसी ही है।

भारतेन्दु हरिशचन्द्र के नाटक 'अंधेर नगरी' में मछली के प्रतीक रूप में नारी की स्थिति परिस्थिति का हृदयस्पर्शी चित्रण किया गया है। बाजार में मछली बिकने के लिए आई है। सोचिए कितनी चमकदार

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

त्वरित गति से पानी को चीर कर आगे बढ़ने वाली सुन्दर मोहक आँखों वाली किसे नहीं अपना बना लेती है :–

मछरिया एक टके कै बिकाय।
लख टका के बाला जोबन, देखत ही फंसि जाय।
नैन मछरिया रूप जाल में, देखत ही फंसि जाय।
बिन पानी मछरी सो बिरहिया, मिले बिना अकुलाय।।[7]

सच है जिस प्रकार मछली को जीने के लिए पानी चाहिए, तो नारी को समाज में मान–समान और समुचित स्थान चाहिए। गीत की पंक्तियाँ इसी भाव को व्यक्त कर समाज की आँखें खोलना चाहती हैं :–

प्रसाद कृत चन्द्रगुपत नाटक में अलका पर्वतेश्वर के सम्मुख स्नेह रिसक्त गान गाती हैं ज बवह विशेष विचार में खोया हुआ था :–

''बिखरी किरन अलका व्याकुल हो विरस बदन पर चिन्ता लेख,
छायापथ में राह देखती गिनती प्रणत–अविधा की रेख।
प्रियतम के आगमन–पंथ में उड़ न रही है कोमल धूल,
कादम्बिनी उठो यह ढँकने वाली दूर जलधि के फूल।
समय विहग के कृष्ण पक्ष में रजत चित्र सी अंकित कौन,
तुम हो सुन्दरि तरल तारिके, बोले कुछ बैठो मत मौन।।[8]

प्रसाद कृत ध्रुवस्वामिनी में नारी की विरांगना के रूप में चित्रित किया गया है। इस नाटक की यात्राएँ युवाओं में उत्साह, उमंग और उनके बढ़ते हुए कदम देखना चाहती हैं। मंदाकिनी मनभावन गीत में ऐसा ही प्रेरक भाव लेकर सामने आती है :–

''पैरो के नीचे जलधर हों, बिजली से उनका खेल चले।
संकीर्ण कगारों के नीचे, शत शत झरने बेमेल चलें।
सन्नाटे में हो विकल पवन, पादप निल पद हो चूम रहे।
तब भी गिरिपथ का अथक पथिक, ऊपर ऊँचे सब झेल चले।।''[9]

हिन्दी नाट्य–गीतों में एक ओर नारी के दिव्य रूप दिखाई देता है, तो दूसरी ओर विषय कर्म और विषम व्यवहार सामने आता है। 'वैदिक हिंसा हिंसा न भवति' में शराब पिलाने वाली नारी दूसरों को मदमस्त करने की भूमिका में सामने आती है। नाटक में पुरोहित पूरी राम मदिरा का पान कर मदमस्त है। वह नाच–नाच कर गीत गा रहा है :–

''यह माया हरि की कलवारिन मद पियाय राखा बौराई।
एक पड़ा भुइँया में लौटें दूसर कहे चोखी दे भाई।।
राम रस पीओ रे भाई।।''[10]

नारी में कोई भी कला उसे समाज में सम्मानित स्थान नहीं दिला सकती है। पूर्व कालों में नृत्य कला को महत्व दिया जाता था, किन्तु नारी का नर्तकी होना अच्छा नहीं माना जाता था। हरिकृष्ण प्रेमी के नाटक 'अमृतपुत्री' में कणिका नर्तकी गीत और प्रभावी गतिविधि में क्षत्रप् फिलिप्स के सम्मुख आती है :–

''आज मेरी चितवनों में,
मुसकराता काल है।
आज मेंरे नूपुरो में,

बोलता भूचाल है।''[11]

नाट्य गीतों में नारी की विषम स्थिति का चित्रांकन भी विस्तार से किया गया है। भारतेन्दु हरिशचन्द्र के नाटक 'प्रम योगिनी' में देवनगरी काशी में नारी की दयनीय और चिंतित होने की स्थिति का चित्रांकन किया गया है :–

''आधी कासी भाट भंडरिया बाम्हन और संयासी।
आधी कासी रंडी मुंडी राँड खानगी स्वासी।।
.....
घर की जोरू लड़के भूखे बने दास औ दासी।
दाल की मंठी पूर्ज मानों इनकी मासी।।''[12]

भारतेन्दु हरिशचन्द्र के नाटक 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' में अधिकांश संदर्भों में विषमता का ही चित्रण किया गया है। इसी क्रम में नारी को मदिरा और मांस से जोड़ कर भोग विलास की वस्तु के रूप में प्रस्तुत कर दिया है। 'राग सोरठ' में गीत इस तथ्या को सामने ला रहा है। :–

''मनिष चित्त धरी यह बात।
बिना भक्षण मास के सब व्यर्थ जीवन जात।
जिन न खायो मच्छ जिन नहिं किया मदिरा पान।
कछु कियो नहिं तिन जगत मैं यह सू निहचै जान।
जिन ने चूम्मौ अधर सुन्दर और गोल कपोल।
जिन न परम्यौ कुंभ कच नहिं लाखी नसा लोल।
एकहि निसि जिन ने किना जोग नहिं रस लीन।
जनिए निह पै ते पशु है, तिन कछु नहिं कीन।।''[13]

भारतवर्ष में कभी पति की मृत्यू के पश्चात् जौहर प्रथा का प्रचलन था। विधवा नारी पति की चिता में कूद कर प्राण त्याग देती रही है। कुछ नाट्य गीतों में सती होने को भी गाकर प्रसतुत किया गया है। हरिकृष्ण प्रेमी के नाटक 'रक्षा बन्धन' में महारानी कर्मवती और राजपूत नवयुवतियों के द्वारा समवेत गीत गाया जाता है :–

''भली जली जौहर की ज्वाला,
लेने आया पीहर वाला,
वह लपटों का ओढ़ दुशाला,
अब उसका अनुसरण करो री,
सजनी, मरण को वरण करो री।''[14]

मनुष्य का मन तर्क–वितर्क में डूबा रहता है। ऐसे में शंका का होना स्वाभाविक है। नारी का कोमल मन भी अपने प्रियतम के विषय में शंकालु हो जाता है। भारतेन्दु हशिचन्द्र कृत श्रीत चन्द्रावली नाटक में चन्द्रावली के द्वारा गाये गये गीत में कुछ ऐसा ही भाव उभर कर आया है :–

''पिय तोहि कैसे हिय राखौ छिपाय।
सुन्दर रूप लखत सब कोऊ यहै पलकन और दुराय।
नैनन में पुतरी करि राखौ पलकन और दुराय।
हियरे में मनहु के अन्तर कैसे लउ लुकाय।।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

मेरी भाग रूप पिय तुमरी छीनत सौतें हाय।
हरीचन्द्र जीवन धन मेरे छिपत न क्यों इत धाय।''[15]

जीवन में संयोग और वियोग का कर्म धूप–छाव या दिन और रात की तरह चलता रहता है। हिन्दी नाट्य–गीतों में नारी–पुरूष या प्रियतम और प्रियतमा के संयोग चित्रण के साथ विप्रलंभ का भी मार्मिक चित्रण किया गया है।

हरिकृष्ण प्रेमी के नाटक 'अमृतपुत्री' में सिंहरण की पुत्री जय श्री के मन में जयपाल के प्रति अपूर्व प्रेम है, किन्तु मिलना कठिन हो रहा है। ऐसे में वह अपने भावों को गीतों के माध्यम से गाकर प्रस्तुत कर रही है :–

''हम नदी के इस किनारे,
वह नदी के उस किनारे।
चाहते पर मिल न सकते,
विश्व की बाहें अड़ी हैं,
पथ को रोक हमारे।।[16]

बसंत की माधुरी हवा और मनमोहक वातावरण से दूर पतझर के नीरस परिवेश में रहना अति कष्टकर होता है। प्रियतम से वियोग होने के बाद वे सारे आधार जो मिलन में सुखद लगते हैं, वे ही पीड़ादायक सिद्ध होते हैं। भारतेन्दु हरिशचन्द्र कृत 'नीलदेवी' नाटक में अमीर के सम्मुख ऐसा ही भाव गीत प्रस्तुत किया जाता है। जिसमें वियोगिनी के दर्द की अभिव्यक्ति हो रही है :–

''हाँ मोसे सेजिया चढ़लि नहिं जाई हो।
पिय बिन साँपिन सी डसै बिरह रैन।
दिन दिन बढ़त बिथा तन सजनी।
कटत न कठित बियोग की रजनी।
बिन हरि अति अकुलाई हो।।[17]

प्रस्तुत विवेचन और विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि हिन्दी नाटय–गीतों की दृष्टि से भारतेन्दु युग से द्विवेदी युग और प्रसाग युग तक समाज के विभिन्न पक्षों को लगातार प्रभावी रूप में चित्रण किया गया है। अनुकूल संदर्भों के खान–पान में आदर्श रूप मानने आया है, तो व्यंग्य और हास्य संदर्भों में विकारग्रस्त रूप उभरे हैं।

रंगमंच के आकर्षण और सहज अभिव्यक्ति के लिए बच्चे–बूढ़े और जवान, अमीर–गरीब, राजा–रंक, नर–नारी आदि की प्रस्तुति होती है। उनका वस्त्राभूषण और श्रृंगार पात्रानुकूल होता है। नाट्य–गीतों में इतनी विस्तृत नहीं, किन्तु यत्र–तत्र प्रस्तुति होती है। हिन्दी नाट्य गीतों में श्रृंगार और वस्त्राभूषण का प्रयोग पर्याप्त प्रभावी है।

नाट्य गीतों में रहन–सहन और व्यावहारिकता का सर्वाधिक आकर्षक और वैविध्यपूर्ण चित्रण है। धर्म प्रधान और संस्कार प्रबल भारतवर्ष के हिन्दी नाट्यगीतों में आस्था–विश्वास और भक्तिभाव का मनमोहक रूप होना स्वाभाविक है।

नाटकों में उत्सव, पर्व और परंपरा में चित्रित करने से नाट्य साहित्य को विशेष रंग मिल गया है। नाट्यगीतों में परिवार के विभिन्न संबंधों का सम–विषय दोनों रूपों में चित्रण किया गया है। परिवार और समाज के चित्रण में नारी की प्रमुखता से अपनाया गया है। अधिकांश नाट्य गीतों में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

रूप में नारी के साहसिक प्रेम–प्रवाह वियोगिनी और प्रेरक आदि रूपों में चित्रांकन किया गया है। निश्चिय ही हिन्दी नाट्य गीतोकं में भारतीय संस्कार से जुड़ा सहज प्रेरक और मनमोहक स्वरूपों का चित्रण किया गया है।

सन्दर्भ–सूची :–

1. संपा. हेमन्त शर्मा, भारतेन्दू समग्र, सत्य हरिशचन्द्र, पृ0 394–95
2. जयशंकर प्रसाद, चन्द्रगुप्त, पृ0 174–75
3. सम पृ0 174
4. सम, ध्रुवस्वामिनी, पृ0 37
5. सम, चन्द्रगुप्त, पृ0 101
6. सम, पृ0 54–55
7. संपा. डॉ0 नरेश मिश्र, अंधेर नगरी, पृ0 30
8. जयशंकर प्रसाद, चन्द्रगुप्त, पृ0 105
9. सम, ध्रुवस्वामिनी, पृ0 34–35
10. संपा, हेमन्त शर्मा, भारतेन्दु समग्र, वैदिक हिंसा हिंसा न भवति, पृ0 314
11. हरिकृष्ण प्रेमी, अमृत पुत्री, पृ0 111
12. संपा, हेमन्त शर्मा, भारतेन्दु समग्र, वैदिक हिंसा हिंसा न भवति, पृ0 411
13. संपा, हेमन्त शर्मा, भारतेन्दु समग्र, भारतेन्दु समग्र, श्री चन्द्रावली, पृ0 459
14. हरिकृष्ण प्रेमी, अमृत पुत्री, पृ0 9
15. संपा, हेमन्त शर्मा, भारतेन्दु समग्र, भारतेन्दु समग्र, नील देवी, पृ0 487